एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ककोड़ा की खेती: बारिश के मौसम में बेहतर कमाई देने वाली खास सब्जी

*भरत कुमार एवं मनीष कुमार दुरिया
श्रीनाथजी कृषि महाविद्यालय, नाथद्वारा, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: chouhan.bharat58@gmail.com

भारत में वर्षा ऋतु के दौरान किसान अनेक प्रकार की सब्जियों का उत्पादन करते हैं। इन्हीं में ककोड़ा एक ऐसी फसल है जिसकी बाजार में अच्छी मांग देखने को मिलती है। अलग-अलग क्षेत्रों में इसे काटवल, परोड़ा, खेखसी और अन्य स्थानीय नामों से भी जाना जाता है। इसकी खासियत यह है कि यह बरसात के मौसम में तेजी से बढ़ती है और कई स्थानों पर प्राकृतिक रूप से भी उगती हुई मिल जाती है। बढ़ती मांग और अच्छे बाजार भाव के कारण यह किसानों के लिए लाभदायक विकल्प बन सकती है। ककोड़ा कद्दू वर्ग की एक बहुवर्षीय बेलदार सब्जी है। इसके फलों की बाहरी सतह पर छोटे और मुलायम कांटे होते हैं। स्वादिष्ट होने के साथ-साथ यह पोषण से भरपूर मानी जाती है। इसकी सब्जी और अचार दोनों ही काफी पसंद किए जाते हैं। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार यह शरीर में कफ, वात और पित्त के संतुलन में मदद करती है। इसके अलावा मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए भी इसे उपयोगी माना जाता है। इसकी जड़ों का उपयोग कई ग्रामीण क्षेत्रों में बवासीर, मूत्र संबंधी परेशानियों और बुखार जैसी समस्याओं में घरेलू उपचार के रूप में किया जाता है।

ककोड़ा की खेती से संभावित कमाई

ककोड़ा ऐसी फसल है जो किसानों को लंबे समय तक उत्पादन देती है। बुवाई के लगभग 60 से 90 दिनों के भीतर इसके कोमल फल बाजार में बेचने योग्य हो जाते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक बार लगाए गए मादा पौधे से कई वर्षों तक लगातार फल प्राप्त किए जा सकते हैं। सामान्यतः एक पौधा 8 से 10 वर्षों तक उत्पादन देने में सक्षम माना जाता है। बाजार में इसकी कीमत मौसम और मांग के अनुसार बदलती रहती है। शुरुआती दौर में इसका भाव लगभग 90 से 100 रुपये प्रति किलोग्राम तक मिल सकता है, जबकि मांग बढ़ने पर यह 150 रुपये प्रति किलोग्राम या उससे अधिक भी पहुंच सकता है। यदि किसान वैज्ञानिक तरीके से इसकी खेती करें तो कम क्षेत्र में भी अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर 3 एकड़ क्षेत्र से 60 से 70 क्विंटल तक उपज हासिल की जा सकती है। यदि बिक्री दर 15,000 रुपये प्रति क्विंटल मानी जाए तो कुल आय लगभग 9 लाख रुपये तक पहुंच सकती है। खेती की लागत निकालने के बाद भी अच्छा शुद्ध लाभ प्राप्त होने की संभावना रहती है।

ककोड़ा की प्रमुख उन्नत किस्में

बेहतर उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों का चयन महत्वपूर्ण होता है। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित "इंदिरा ककोड़ा-1 (आरएमएफ-37)" किसानों के बीच लोकप्रिय किस्मों में से एक है। यह किस्म उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र और ओडिशा जैसे राज्यों की जलवायु में अच्छी तरह विकसित होती है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि यह कई सामान्य कीटों के प्रति सहनशील मानी जाती है और लगभग 35 से 40 दिनों में

तुड़ाई योग्य फल देने लगती है। इसके अलावा अम्बिका-12-1, अम्बिका-12-2 और अम्बिका-12-3 जैसी किस्में भी अच्छी पैदावार के लिए जानी जाती हैं। उचित देखभाल के साथ पहले वर्ष में लगभग 4 क्विंटल प्रति एकड़, दूसरे वर्ष में 6 क्विंटल और तीसरे वर्ष में 8 क्विंटल प्रति एकड़ तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

ककोड़ा की खेती करने का तरीका

ककोड़ा की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में सफलतापूर्वक की जा सकती है, लेकिन अत्यधिक अम्लीय भूमि इसके लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती। अच्छी जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी, जिसमें पर्याप्त मात्रा में जैविक तत्व मौजूद हों, इस फसल के लिए सबसे बेहतर रहती है। भूमि का पीएच स्तर 6 से 7 के बीच होना चाहिए। खेती शुरू करने से पहले खेत की गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए। बीज से खेती करने पर प्रति हेक्टेयर लगभग 8 से 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। वहीं, यदि कंदों के माध्यम से रोपण किया जा रहा हो तो लगभग 10,000 कंद प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ सकती है। बुवाई क्यारियों या गड्ढों दोनों तरीकों से की जा सकती है। बीजों को लगभग 2 सेंटीमीटर गहराई पर बोना उचित माना जाता है। पौधों और कतारों के बीच लगभग 1 मीटर की दूरी रखने से बेलों को फैलने के लिए पर्याप्त स्थान मिलता है। प्रत्येक गड्ढे में 2 से 3 बीज डाले जा सकते हैं, लेकिन बाद में केवल स्वस्थ पौधे को ही रखा जाना चाहिए। बेहतर फलन के लिए नर और मादा पौधों का संतुलित अनुपात बनाए रखना जरूरी होता है।

खाद, उर्वरक और सिंचाई प्रबंधन

उच्च उत्पादन प्राप्त करने के लिए खेत की तैयारी के समय पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद का उपयोग करना चाहिए। अंतिम जुताई के दौरान लगभग 200 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिट्टी में मिला देना लाभकारी रहता है। इसके साथ ही आवश्यकता अनुसार यूरिया, सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) और म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) का संतुलित प्रयोग किया जा सकता है। बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करना आवश्यक होता है ताकि बीजों का अंकुरण बेहतर हो सके। बरसात के मौसम में सामान्यतः अतिरिक्त सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती, लेकिन यदि लंबे समय तक वर्षा न हो तो खेत में नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई करनी चाहिए। ध्यान रहे कि खेत में पानी जमा न होने पाए, क्योंकि अधिक नमी से बीज और कंद खराब हो सकते हैं। फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए समय-समय पर निराई और गुड़ाई करनी चाहिए। चूंकि ककोड़ा एक बेलदार पौधा है, इसलिए इसकी बेलों को ऊपर चढ़ाने के लिए बांस, लकड़ी, तार या अन्य सहारा संरचनाओं का उपयोग करना चाहिए। इससे पौधों का विकास बेहतर होता है और उत्पादन में भी वृद्धि देखने को मिलती है। ककोड़ा में अधिक उपज प्राप्त करने के लिए पौधों को सहारा देना आवश्यक है। सहारा मिलने से बेलों की वृद्धि अच्छी होती है तथा गुणवत्तायुक्त फल प्राप्त होते हैं। इसके लिए बांस, सूखी टहनियों या जालीनुमा संरचना का उपयोग किया जा सकता है। ककोड़ा बहुवर्षीय फसल होने के कारण मजबूत ट्रेलिस व्यवस्था अपनाने से उत्पादन बढ़ता है।